मुख्य संरक्षक : प्रो० सुरेन्द्र प्रताप सिंह
माननीय कुलपति
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

संरक्षक : प्रो० डॉली सिन्हा
प्रतिकुलपति
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

अध्यक्षता : डॉ मीना प्रसाद
प्रधानाचार्य

संयोजक : डॉ0 शशि भूषण कुमार 'शशि',
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

आयोजन सचिव : श्री रघुवीर कुमार रंजन
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग

बीज वक्ता : प्रो0 चन्द्रभानु प्र0 सिंह,
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

विशिष्ट वक्ता : डॉ0 सुभाषचन्द गुप्ता,
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज,
जमशेदपुर (झारखंड)

मुख्य वक्ता : प्रो0 श्वेता दीप्ति,
केन्द्रीय हिन्दी विभाग,
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
कीर्तिपुर (काठमांडू), नेपाल

समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर
तेज स्विनाव धीनमस्तु
स्थापित : 1947

द्विदिवसीय

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

28–29 जनवरी 2021

मीडिया का समकालीन परिदृश्य

आयोजक
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर
एवं
शाक्य मुनि फाउण्डेशन
बंगाली टोला, समस्तीपुर

मीडिया का समकालीन परिदृश्य

सूचना तकनीक के वर्तमान दौर में जन संचार माध्यम नित नये रूप में प्रकट होकर जन भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहा है। अपने आरंभिक काल में जब छापाखाना के विकास के साथ मुद्रित रूप में प्रिंट मीडिया का प्रचलन हुआ, वह उपनिवेश काल का समय था और राष्ट्रीय भावनाओं के प्रसार में इसकी उल्लेखनीय भूमिका रही। समय के साथ तकनीकी विकास ने मीडिया के स्वरूप में आमूल परिवर्तन कर दिया। व्यक्ति, समाज और समय का परस्पर संबंध जिस प्रकार हाल के दशकों में बदला, उसमें मीडिया की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। दृश्य–श्रव्य रूप में आज इसके दर्जनों संस्करण जन–जन के लिए सहज रूप में उपलब्ध है।

वर्तमान में राज्य और देश की सीमा को अतिक्रमित कर मीडिया वैश्विक स्वरूप ग्रहण कर चुका है और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सहभागिता का अवसर भी प्रदान कर रहा है। अब व्यक्ति मात्र पाठक या श्रोता भर नहीं है। वह अब इसमें तत्काल हस्तक्षेप कर अपनी प्रतिक्रिया दे सकता है और अपनी प्रतिक्रिया पर वैश्विक रूप से व्यक्त होनेवाली सहमति– असहमति का तत्काल उत्तर–प्रतिउत्तर का आदान–प्रदान कर सकता है। इसलिए आज की मीडिया के इस नये स्वरूप को अभिव्यक्त करने के लिए 'न्यू मीडिया' और 'सोशल मीडिया' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। अतीत, वर्तमान और भविष्य के अनागत दौर तक व्याप्त आज मीडिया दोतरफा संवाद, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष के बीच संवाद की नयी भूमिका में अहर्निश सेवारत है।

परंतु इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि मीडिया के इस सर्वसुलभ रूप के दुरूपयोग की घटनाएँ भी बढ़ रही है। कुछ असामाजिक तत्व धार्मिक, राजनीतिक विद्वेष के कारण एक–दूसरे के प्रति अशोभनीय टिप्पणी से समाज में तनाव उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं। जबकि सोशल मीडिया का उपयोग धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से उन्नत मानव–जीवन के विकास के लिए होना चाहिए था।

मीडिया की रचनात्मक भूमिका से ही संपूर्ण विश्व का मानव समाज परस्पर निकट और सुख–दुख के प्रति संवेदित हो सकता है। इस सेमिनार का उद्देश्य मीडिया के गुण–दोष पर विमर्श करके जन धर्मी, संवेदनशील और रचनात्मक चरित्र को विकसित करना है।

इस सेमिनार के माध्यम से मीडिया के विविध स्वरूपों का व्यक्ति और समाज पर पड़नेवाले सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव एवं इनके गुण–दोषों के विविध पक्षों पर बौद्धिक विमर्श के परिणामतः प्राप्त तथ्यों से इसके निहितार्थ को जाना–समझा जा सकेगा। विशेष रूप से भारत जैसा देश जिसकी सामासिक संस्कृति सदियों से कायम है। विविध धर्मावलंबी, विविध भाषायी समूह आज भी परस्पर एकता के सूत्र में आबद्ध हैं।

भारतीय समाज का यह समन्वयवादी स्वरूप हमने विरासत में प्राप्त किया है। सोशल मीडिया ने जन–जन को परस्पर संवाद को जो अवसर प्रदान किया है, इसका प्रयोग कुछ अलगाववादी तत्व राजनीति, विभिन्न धर्म, क्षेत्र और भाषायी समूहों के बीच घृणा तथा नफरत फैलाने के लिए कर रहे हैं, यह चिन्ता का विषय है। इसके साथ ही लैंगिक छींटाकशी, अभद्र टिप्पणियों से भी हमारी सामासिक संस्कृति के समक्ष कभी–कभी गंभीर संकट उत्पन्न हो जाता है।

इन परिस्थितियों में मीडिया की सामाजिक भूमिका और दायित्व पर पुनर्विचार आवश्यक है। इस सेमिनार से मीडिया की रचनात्मक भूमिका के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

उप शीर्षक

मीडिया : जनसंवाद की नयी भूमिका
मीडिया : न्यू मीडिया की अवधारणा
मीडिया : समाज और साहित्य पर प्रभाव
मीडिया : बाजार विस्तार की भूमिका में
मीडिया : मानव स्वभाव में परिवर्तन
मीडिया : सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रभाव
मीडिया : वैश्विक संप्रेषण का नया दौर
मीडिया : सूचना और ज्ञान का घालमेल
मीडिया : बलॉग, पोर्टल अभिव्यक्ति का नया स्वरूप
मीडिया : आभासी दुनिया में भटकाव
मीडिया : फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप्प

ध्यातव्य

शीर्षक से सम्बंधित अन्य शोध आलेख भी स्वीकार होंगे। शोध आलेख 2000 शब्दों में (टंकित) एवं शोध–सारांश 300 शब्दों (टंकित) में होना चाहिए। शोध सारांश एवं शोध–आलेख 21.01.2021 तक *अवश्य* भेज दें। टंकन कार्य KRUTIDEO-10 में होना चाहिए। शोध–सारांश / शोध–आलेख pr.shashi777@gmail.com केवल पर भेजा जा सकता है।

पंजीयन : छात्र / छात्राएँ 300 / – रुपये, शोधार्थी 500 / – रुपये, शिक्षक 700 / – रुपये मात्र पंजीयन की राशि नकद या निफ्ट के द्वारा स्वीकार होंगे।

Account No. : 3878147546
IFSC Code : CBIN0280055
Account Holder : SANYOJAK ANTARRASHTRIY SANGOSHTI
Bank Name : *CENTRAL BANK OF INDIA*
Branch : Samastipur

संयोजक
अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी
मो0–9905963177, 9523304560

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

28-29 जनवरी 2021

मीडिया का समकालीन परिदृश्य

पंजीयन

1. नाम :
2. पता :

3. पेशा : छात्र/शोधार्थी/शिक्षक/अन्य
4. सम्पर्क (मोबाईल) :
5. ई-मेल :
6. शोध-पत्र का शीर्षक :
7. भुगतेय राशि का विवरण :

हस्ताक्षर